पूर्वोत्तर प्रभा

(सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक शोध पत्रिका)

Journal Home Page: **http://supp.cus.ac.in/**

बुद्ध धम्म परीक्षा का समीक्षात्मक अध्ययन

नीतू थापा

शोधार्थी

हिंदी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग

ईमेल: neetuthapa90@gmail.com

शोध सारांश: समाज एक से अधिक लोगों के समुदाय से मिलकर बने एक वृहद समूह को कहते हैं, जिसमें सभी व्यक्ति मानवीय क्रिया कलाप करते हैं। जब मानव अपनी मानवता खो बैठता है तो उसी समाज में जाति, धर्म एवं ऊंच-नीच के नाम पर अलगाव देखने को मिलता है। इसी मानवता को बचाने के लिए समय-समय पर ऐसे व्यक्तियों का जन्म हुआ जिन्होंने अपने अच्छे कार्य एवं उपदेशों के माध्यम से समाज को सही दिशा देने का काम किया। ऐसे ही समय में गौतम बुद्ध जैसे महापुरुष का जन्म हुआ था जिन्होंने अपना समूचा जीवन समाज कल्याण हेतु समर्पण कर दिया। जिनके उपदेश वर्तमान समय में भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितना महत्वपूर्ण तत्कालीन समय में था। बौद्ध धर्म किसी भी धर्म अथवा समुदाय का विरोध नहीं करता। बल्कि वह समाज में निहित जातिवाद, कर्मकांड, पाखंड, हिंसा और अनाचार का विरोध करता है। बुद्ध ने उन सभी को आश्रय दिया जिन्हें समाज में अवहेलित माना गया।

सूचक शब्द- धम्म परीक्षा, बुद्धत्व, कल्याण, अष्टांगिक, मानवता

मूल लेख

गौतम बुद्ध ने अपना समूचा जीवन मानव कल्याण के हित में समर्पित कर दिया। वे कहते हैं कि किसी भी चीज को यूं ही नहीं मान लेना चाहिए। उसके लिए हमें सत्य की खोज करनी चाहिए, जिस प्रकार विज्ञान करता है। बौद्ध परंपरा के अनुसार गौतम बुद्ध अठाईसवें बुद्ध थे। बचपन से ही गौतम बुद्ध का स्वभाव संसार में घटित होने वाले अच्छे-बुरे क्रिया कलापों के प्रति विचारशील था। वे मानवता के हित और कल्याण के प्रति चिंतित और सजग थे। वे प्रायः सोचा करते थे कि मनुष्य रोग से ग्रसित क्यों होता है? मनुष्य के बूढ़े होने और मृत्यु के पीछे क्या कारण हो सकता है? इन सारी समस्याओं से बचने और इसके निराकरण के लिए कोई उपाय है या नहीं? इन्हीं विचारों से लिप्त होकर उन्होंने गृह त्याग कर दिया और छः साल की कठोर तपस्या के पश्चात बोधिवृक्ष के नीचे इन्हें बुद्धत्व प्राप्त हुआ। बुद्ध ने मानव कल्याण हेतु आठ मार्ग बताए हैं जिसे अष्टांगिक मार्ग भी कहा जा सकता है जो इस प्रकार हैं- “1.सम्यक् दृष्टि 2. सम्यक् वाणी 3. सम्यक् संकल्प 4. सम्यक् कर्मान्त 5. सम्यक् आजीवन 6. सम्यक्व्यायाम 7. सम्यक् स्मृति 8. सम्यक् समाधि।” (कर्दम, 1997, पृ. 10) इन आठों

मार्गों की व्याख्या करते हुए गौतम बुद्ध का अपने अनुयायियों से कहना है कि मेरे उपदेशों को अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न करो; पवित्र-से-पवित्र जीवन बिताओ और नियमित रूप से ध्यान और समाधि करो।

गौतम बुद्ध हमेशा से चली आ रही परम्परा को तोड़ना चाहते थे। उनका मानना था कि ये परम्पराएं हमें ऊपर उठाने का कार्य नहीं करती है बल्कि यह हमें दास बनाकर रखने का कार्य करती है। बाल्यावस्था से ही इनकी चेतना शक्ति की प्रबलता की झलक हम इनके बाल्यकाल में हुई एक घटना से कर सकते हैं। जब वे अपने पिता के साथ अपने खेत में मजदूर को बिना वस्त्र धूप में कठिन परिश्रम करते हुए देखते हैं तो वे अपने मित्र से कहते हैं- "एक आदमी दूसरे का शोषण करे, क्या इसे ठीक कहा जाएगा? मजदूर मेहनत करे और मालिक उसकी मजदूरी पर गुलछैरे उड़ाये, यह कैसे ठीक हो सकता है।" (कर्दम, 1997, पृ. 08) बचपन में ही उनके ऐसे विचार उन्हें ऐसी परिधि में ले आते हैं जिस पर वे भविष्य में जाकर खरे उतरते हैं। अतः जिस प्रकार मानवतावाद सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष है, सभी प्राणियों के प्रति समानता की भावना रखना वही भावना गौतम बुद्ध की भी थी।

ज्ञान प्राप्ति के पश्चात गौतम बुद्ध सारनाथ की ओर आगमन करते हैं। उनके धम्म परीक्षा का आरंभ हम वहीं से मान सकते हैं। वे सर्वप्रथम अपने पाँच परिव्राजकों को धम्म का उपदेश देते हुए मनुष्यता का ज्ञान देते हैं, उनका कहना था कि- "बुद्ध धम्म का केंद्र बिन्दु है आदमी और इस पृथ्वी पर रहते समय आदमी का आदमी के प्रति क्या कर्तव्य होना चाहिए।" (कर्दम, 1997, पृ. 76) वर्तमान समय में मनुष्य के भीतर मानवता समाप्त होती जा रही है। मानवता के हनन होने के पीछे कई कारण है जैसे- मनुष्य-मनुष्य के बीच छोटी से छोटी बात पर लड़ाई-झगड़ा होना, बात बिगड़ने पर हत्या जैसे कुकृत्य तक कर गुजरना। वहीं समाज में स्त्री के प्रति बढ़ते अपराध, चोरी-चकारी यह सब आज आम बात हो गई है। इन सभी समस्याओं के समाधान अथवा मुक्ति के लिए मनुष्य को स्वयं बुद्ध धम्म अपनाकर अपने मुक्ति का मार्ग खोजना होगा तथा पवित्रता के पथ एवं शील मार्ग पर चलना होगा, तभी इन सारे दु:खों का एकांतिक निवारण हो सकता है।

धम्म : एक परिचय

धम्म अर्थात् 'निर्वाण' प्राप्त करना। निर्वाण शब्द का अर्थ होता है, 'बुझा हुआ' किंतु बौद्ध धर्म के अनुसार 'निर्वाण' का विशेष अर्थ है। पालि भाषा में निर्वाण को 'निब्बान' कहा जाता है, जिसका अर्थ होता है 'मुक्ति पाना' यानी की लालच, घृणा और भ्रम की अग्नि से मुक्ति। यह बौद्ध धर्म का परम सत्य और मुख्य सिद्धांत है। वहीं 'धम्म' पालि भाषा का शब्द है जिसका अर्थ होता है, प्रकृति के नियमों के अनुसार जीवन यापन करना। जो इंसान प्रकृति के नियमों के अनुसार जीवन-यापन करेगा, वह स्वस्थ और प्रसन्न रहेगा। उन्होंने दस शीलों पर बल दिया है जो इस प्रकार हैं- 1. शील 2. दान 3. उपेक्षा 4. नैष्क्रम्य 5. वीर्य 6. शान्ति 7. सत्य 8. अधिष्ठान 9.करुणा 10. मैत्री

बुद्ध के द्वारा बताए गए इन दस शीलों को अपनाकर मनुष्य मानवता के मार्ग पर चलकर अपनी मुक्ति का रास्ता खोज सकता है। गौतम बुद्ध एक शिक्षक, उपदेशक तथा यथार्थवादी चिंतक थे। उन्होंने कभी भी लोगों को झूठा आश्वासन नहीं दिया। वे कहते थे कि मैं तो सिर्फ मानव को मानवता का मार्ग प्रदर्शित कराने वाला हूँ। उसी मार्ग से होते हुए मनुष्य को अपनी मुक्ति का मार्ग स्वयं खोजना होगा।

बुद्ध धम्म मनुष्य को मनुष्य के समान देखता है। उनके लिए मानव कल्याण ही सर्वोपरि है। हिंदू धर्म चार वर्ण व्यवस्था को स्थापित करता है, जो- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र हैं और ये सभी जातियां ब्रह्मा के शरीर के विभिन्न हिस्सों से जन्म लेती हैं। किन्तु जन्म से जुड़े इस अंधविश्वास को खंडित करते हुए तथागत कहते हैं कि "संसार में जब नर-मादा का संयोग होता है तभी प्राणी उत्पन्न होता है फिर इसमें अन्य शक्ति पर विश्वास करना व्यर्थ है इसको बनाने वाला ईश्वर नहीं स्वयं प्राणी है। उन्हें अपने आप पर विश्वास रखना चाहिए। अतः मानव शरीर लौकिकता का नहीं भौतिक दुनिया का एक अटल सत्य है, जिसे कोई नकार नहीं सकता।

प्रारम्भ से ही समाज में मनुष्य-मनुष्य के बीच ऊंच-नीच जैसी जाति व्यवस्था को लेकर भेद-भाव उत्पन्न होते रहे हैं, जहाँ समाज में ब्राह्मणों को ऊंचा स्थान प्राप्त है तो वहीं शूद्रों को सबसे नीचे रखा जाता है, और हर क्षेत्र में उनके साथ भेद-भाव किया जाता है। किन्तु गौतम बुद्ध हमेशा से ही मनुष्यों के बीच होने वाले भेद-भाव के खिलाफ रहे, इस जातीय व्यवस्था के खिलाफ रहे। बुद्ध किसी जाति व्यवस्था को नहीं मानते, वह किसी व्यक्ति की जाति देखकर उसे परिव्राजक नहीं करते। इसका सही उदाहरण देखा जाए तो बुद्ध के द्वारा दिए गए उपदेशों में और परिव्रजित हुए व्यक्तियों को हम देख सकते हैं। उनके लिए न कोई राजा था न कोई प्रजा सब एक समान थे।

उदाहरणतः एक निम्न जाति का व्यक्ति सुणीत जो कूड़ा-कचरा उठाने का कार्य करता था। बुद्ध ने उसे भी धम्म की दीक्षा दी और उसे महान बना दिया, सुणीत को इतना महान बनते देख सभी प्रश्न करते हैं, इस पर बुद्ध कहते हैं कि- "जिस प्रकार रास्ते में पड़े किसी कूड़े-कचड़े के ढेर पर एक सुगन्धित कंवल भी उग सकता है उसी प्रकार अंधे-जगत में इस कूड़ा-कचरे संसार में बुद्ध पुत्र प्रकाशित हो सकता है।" (कर्दम, 1997, पृ. 119) अर्थात् एक भंगी जो कूड़ा उठाने का कार्य करता है उसे हिन्दू धर्म के अनुसार सबसे निम्न जाति का कहकर उसके साथ कीड़े-मकोड़े के समान व्यवहार किया जाता है। देखा जाए तो ऐसी मानवता किसी का कल्याण नहीं कर सकती है जो एक व्यक्ति के प्रति ऐसा बर्ताव करता है और समाज में उसे कभी उठने नहीं दिया जाता, जितना हो सके वह और अधिक दबते ही चला जाता है, लेकिन बुद्ध धम्म से परिव्रजक सुणीत कीचड़ में कमल के समान खिल उठता है।

वहीं कुलीन कश्यप परिवार है, जिसमें तीन भाई थे। अग्नि-होत्र में विश्वास करते थे और मुक्ति पाना चाहते थे। बुद्ध उससे प्रश्न करते हैं-"क्या तुम अहर्त् हो? यदि तुम अहर्त् नहीं हो तो यह अग्नि-होत्र तुम्हारा क्या कल्याण करेगा? कश्यप अहर्त् के बारे में नहीं जानता था, तब तथागत ने कहा-"आर्य अष्टांगिक मार्ग पर चलने वाले पथिक के पथ के बाधक सभी राग-द्वेषों को जिसने जीत लिया है वह अहर्त् है। अग्नि होत्र किसी को पाप मुक्ति नहीं करा सकता।" (कर्दम, 1997, पृ. 88) बुद्ध ऐसा तर्क देकर उनकी आस्था या विश्वास को ठेस पहुंचाना नहीं चाहते। वे तो मनुष्य को सही मार्ग बतलाना चाहते हैं कि अग्नि होत्र, पशु बली, नर बली, कर्मकांड करके मानव व्यर्थ में अपना समय बर्बाद कर रहा है, ये सभी क्रियाकलाप मुक्ति की ओर ले जाने वाला मार्ग नहीं है, यह तो केवल मिथ्या है। संसार में मानवता के पाठ पर चलना सदाचारी बनना ही असल मार्ग है। जब मनुष्य भौतिक संसार में जीवन निर्वाह कर रहा होता है उसे तभी सही रास्ते में, सही मार्ग में चलने की

आवश्यकता है, मृत्यु के पश्चात क्या होता है, यह कोई भी नहीं जानता। मानव कल्याण के लिए किए गए कार्य ही मुक्ति का मार्ग है।

समाज में निहित जाति व्यवस्था के साथ-साथ गौतम बुद्ध अपने धम्म में आत्मा और पुनर्जन्म जैसी बातों को भी स्थान नहीं देते। वे इन सभी को व्यर्थ बताते हुए इसका घोर विरोध करते हैं- वे कहते हैं कि आत्मा जैसी कोई चीज नहीं होती। बुद्ध ने आत्मा को कभी स्वीकार नहीं किया। उनका कहना था कि आत्मा नाम की कोई चीज नहीं जो इस शरीर में बाहर से आकर प्रवेश करती हो वह अजर-अमर हो या ईश्वर या परमात्मा का अंश हो जब परमात्मा या ईश्वर का अस्तित्व ही नहीं है तब उसका अंश आत्मा कैसे हो सकता है? आत्मा-परमात्मा पुनर्जन्म जैसे बेतुकी बातों को समाज में बनाकर रखना तथा उसे फलित-पोषित करने के पीछे का उद्देश्य एक मनुष्य के मन में दूसरे मनुष्य का डर पैदा करना और डरने वाले को और अधिक डरा कर रखना है।

इसी प्रकार बुद्ध का विचार है कि मानव के साथ जो तत्काल घटित होता है वह उसके वर्तमान में किए गए अच्छे-बुरे कर्मों का फल है जो जैसा बोएगा अर्थात् वैसा ही काटेगा। इसमें पुनर्जन्म जैसी बातों को कहकर मनुष्य अपना समय बर्बाद न करे बल्कि अच्छा कर्म करे जिससे न खुद का और न संसार के किसी भी प्राणी का अहित हो। इन सबके लिए भगवान बुद्ध के बताए अनुसार मनुष्य को अपने शील पर ध्यान देने की आवश्यकता है जैसे- मानव को हिंसा, चोरी-चकारी, झूठ न बोलना और नशीली पदार्थों का सेवन करने से बचना आवश्यक है। तभी मनुष्य मानवता के मार्ग में सही ढंग से चल सकता है। इन शीलों को बुद्ध धम्म में पंचशील की संज्ञा दी गई है। मानवता के संदर्भ में यह तथ्य यहाँ सटीक बैठता है कि- "मानवता एक ऐसे नैसर्गिक विश्व सृष्टि-शास्त्र में विश्वास रखता है जो पर लौकिकता को मान्यता नहीं देता और केवल प्रत्यक्ष जगत को ही सत्य स्वीकार करता है। मनुष्य एक विकासशील प्राणी है और विशाल सृष्टि का एक अंश है जिसकी मृत्यु के पश्चात् कोई अस्तित्व नहीं है।" (अमरनाथ, 2012, पृ. 276) इस संसार में हमारा शरीर नश्वर है। इसीलिए हमें अपने जीवन काल में अच्छे कार्य करने चाहिए।

बुद्ध अपने धम्म में समता और बराबरी पर बहुत ज़ोर देते थे। वे हमेशा से चलती आ रही परम्पराओं को तोड़ते हुए समाज में मौलिकता की खोज करना चाहते हैं। उनका मानना था कि जो परंपरा चली आ रही है उसे हम मान लें तो वह समाज में अंधविश्वास को जन्म देती है। जिस प्रकार समाज में मनुष्य-मनुष्यों के बीच जाति जैसे घिनौनी व्यवस्था को परंपरानुगत चलाया जा रहा है उसी प्रकार समाज में वैदिक काल से ही स्त्रियों को बराबरी का अधिकार नहीं था। चार दीवारों के बीच रहना, पर्दा करना, घर से बाहर न निकलना जैसी समस्याएँ समाज में फलित और पोषित हो रही थी,परंतु सर्वप्रथम बौद्ध धम्म में ही स्त्रियों को मान-सम्मान दिया गया। "भगवान बुद्ध का मानना था कि स्त्रियाँ भी ज्ञान प्राप्त कर सकती हैं और ज्ञान के द्वारा निर्वाण सुख का साक्षात्कार कर सकती हैं।"[1] स्त्रियों का धम्म में निर्वाण प्राप्त करना बहुत बड़ी घटना थी। अपने अनुयायियों के साथ मिलकर गौतम बुद्ध ने स्त्रियों को समाज में पुरुषों के समान दर्जा देने का जो प्रयास हुआ यह बहुत महत्वपूर्ण था। समाज में जहां स्त्री अपने आप को गैर समझती थी अब वे अपना महत्व अनुभव कर सकती थी साथ ही आदर और सामाजिक दृष्टिकोण में भी उनके प्रति परिवर्तन आया था। बुद्ध धम्म में प्रविष्ट होने वालों में

लाखों स्त्रियाँ थी जैसे-महाप्रजापति गौतमी, राज-रानियाँ, प्रकृति जैसी चंडालिका, आम्रपाली जैसी नर्तकी आदि।

निष्कर्षतः बुद्ध धम्म एक ऐसा मार्ग है, जिसमें व्यक्ति विशेष न रहकर उसी में कहीं विलीन हो जाता है। अपने लिए सोचने से पहले मानव कल्याण के लिए सोचता है। बुद्ध धम्म मनुष्य को नियम और सिद्धांत के बदले सहजता और सरलता से जीवन जीने की सीख देता है। मनुष्य को केंद्र में रखकर सत्य की खोज करने का सुझाव देता है। वे ऐसे मार्ग का निर्माण करते हैं जिस मार्ग में अग्रसर होकर मानव मुक्ति पथ को पा सकता है। उनके लिए समाज में बसो-बास करने वाले समस्त मानव जाति एक समान है। उनमें किसी भी प्रकार की विविधता नहीं है। अतः मनुष्य बुद्ध धम्म को अपनाकर अपना जीवन सदाचार से निर्वाह कर सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

कर्दम, जयप्रकाश. (1997). बौद्ध धर्म के आधार स्तम्भ. दिल्ली: अतिश प्रकाशन.
अमरनाथ. (2012). हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.